**प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी):** आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछले 3 दिवस से, अनेक वरिष्ठ महानुभावों, आदरणीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। करीब सभी के विचार मुझ तक विस्तार से पहुंचे भी हैं। मैंने स्वयं भी कुछ भाषण सुने भी हैं। आदरणीय अध्यक्ष जी, देश की जनता ने हमारी सरकार के प्रति बार-बार जो विश्वास जताया है, उसके लिए मैं आज देश के कोटि-कोटि नागरिकों का आभार व्यक्त करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ।

अध्यक्ष जी, कहते हैं कि भगवान बहुत दयालु है। भगवान की मर्जी होती है तो वह किसी न किसी के माध्यम से अपनी इच्छा की पूर्ति करता है, किसी न किसी को माध्यम बनात है।

मैं इसे भगवान का आशीर्वाद मानता हूं। ईश्वर ने विपक्ष को सुझाया और वह प्रस्ताव लेकर आए । वर्ष 2018 में भी यह ईश्वर का ही आदेश था, जब विपक्ष के मेरे साथी अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए थे । उस समय भी मैंने कहा था कि अविश्वास प्रस्ताव हमारी सरकार का फ्लोर टेस्ट नहीं है। यह मैंने उस दिन कहा था। यह उन्हीं का फ्लोर टेस्ट है, यह मैंने उस दिन भी कहा था और हुआ भी वही। जब मतदान हुआ, तो विपक्ष के पास जितने वोट थे, उतने वोट भी वह जमा नहीं कर पाए थे ।

इतना ही नहीं, जब हम सब जनता के पास गए तो जनता ने भी पूरी ताकत के साथ इनके लिए नो-कंफिडेंस घोषित कर दिया। चुनाव में एनडीए को भी ज्यादा सीटें मिलीं और भाजपा को भी ज्यादा सीटें मिलीं, यानी एक तरह से विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव हमारे लिए शुभ होता है।

आज मैं देख रहा हूं कि आपने तय कर लिया है कि एनडीए और बीजेपी वर्ष 2024 के चुनाव में पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ कर भव्य विजय के साथ जनता के आशीर्वाद से वापिस आएगी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, विपक्ष के प्रस्ताव पर यहां तीन दिनों से अलग-अलग विषयों पर काफी चर्चा हुई है। अच्छा होता कि सत्र की शुरुआत के बाद से ही विपक्ष ने गंभीरता के साथ सदन की कार्यवाही में हिस्सा लिया होता। बीते दिनों इसी सदन ने और हमारे दोनों सदनों में जन विश्वास बिल, मेडिएशन बिल, डेंटल कमीशन बिल, आदिवासियों के लिए जुड़े हुए बिल, डिजिटल डाटा प्रोटेक्शन बिल, नेशनल रिसर्च फाउंडेशन बिल, कोस्टल एक्वा कल्चर से जुड़ा बिल, ऐसे कई

महत्वपूर्ण बिल यहां पारित हुए। ये ऐसे बिल्स थे, जो हमारे फिशरमैन के हक के लिए बिल था, उसका सबसे ज्यादा लाभ केरल को होना था और केरल के सांसदों से ज्यादा अपेक्षा थी। ऐसे बिल पर तो वे अच्छे ढंग से हिस्सा लेते, लेकिन राजनीति उन पर ऐसे हावी हो चुकी है कि उनको फिशरमैन की चिंता नहीं है। यहां नेशनल रिसर्च फाउंडेशन का बिल था, देश की युवा शक्ति के आशा-आकांक्षाओं के लिए एक नई दिशा देने वाला बिल था। हिन्दुस्तान को एक साइंस पावर के रूप में भारत कैसे उभरे, वैसी दीर्घ दृष्टि के साथ सोचा गया था, उससे भी आपका एतराज !

डिजिटल डाटा प्रोटेक्शन बिल, यह बिल अपने आप में देश के युवाओं के जज्बे में, जो बात आज प्रमुखता से है, उससे जुड़ा हुआ था।

आने वाला समय टेक्नोलॉजी ड्रिवेन है। आज डेटा को एक प्रकार से सेकेंड गोल्ड के रूप में माना जाता है। उस पर कितनी गम्भीर चर्चा की जरूरत थी, लेकिन राजनीति आपके लिए प्राथमिकता थी। कई ऐसे बिल्स थे, जो गांव के लिए, गरीब के लिए, दलित के लिए, पिछड़ों के लिए, आदिवासियों के लिए, उनके कल्याण की चर्चा करने के लिए थे, उनके भविष्य के साथ जुड़े हुए थे, लेकिन इसमें इन्हें कोई रुचि नहीं है। देश की जनता ने जिस काम के लिए इनको यहां भेजा है, उस जनता का भी विश्वासघात किया गया है।... (व्यवधान) विपक्ष के कुछ दलों के लिए, उनके आचरण से, उनके व्यवहार से, उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि देश से ज्यादा उनके लिए दल है, देश से बड़ा दल है, देश से पहले प्राथमिकता दल है। मैं समझता हूं कि आपको गरीब के भूख की चिन्ता नहीं है, सत्ता की भूख, यही आपके दिमाग पर सवार है।... (व्यवधान) आपको देश के युवाओं के भविष्य की परवाह नहीं है।... (व्यवधान) आपको अपने राजनीतिक भविष्य की चिंता है।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, आपने झूठे एक दिन सदन चलने भी दिया, किस काम के लिए? ...(व्यवधान) आप झूठे, तो अविश्वास प्रस्ताव पर झूठे। अपने कट्टर भ्रष्ट साथी, उनकी शर्त पर मजबूर हो करके और इस अविश्वास प्रस्ताव पर भी आपने कैसी चर्चा की? मैं तो देख रहा हूं, सोशल मीडिया में आपके दरबारी भी बहुत दु:खी हैं। यह हाल है आपका। देखिए, मजा इस डिबेट

का कि फील्डिंग विपक्ष ने आर्गनाइज की, लेकिन चौके, छक्के यहीं से लगे। … (व्यवधान) विपक्ष नो कान्फिडेंस मोशन पर नो बॉल, नो बॉल पर ही आगे चलता जा रहा है। इधर से सेंचुरी हो रही है, उधर से नो बॉल हो रहे हैं।… (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, मैं हमारे विपक्ष के साथियों से यही कहूंगा कि आप तैयारी करके क्यों नहीं आते । थोड़ी मेहनत कीजिए । मैंने पांच साल आपको मेहनत करने के लिए दिए। वर्ष 2018 में कहा था कि 2023 में आप आना, जरूर आना। पांच साल में भी आप लोग नहीं कर पाए । क्या हाल है आप लोगों का, क्या दारिद्रय है।… (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, विपक्ष के हमारे साथियों को दिखास की, छपास की बहुत इच्छा रहती है और स्वाभाविक भी है। लेकिन आप यह मत भूलिए कि देश भी आपको देख रहा है। आपके एक-एक शब्द को देश गौर से सुन रहा है।… (व्यवधान) लेकिन हर बार देश को आपने निराशा के सिवाय कुछ नहीं दिया है।

विपक्ष के रवैये पर मैं यही कहूंगा कि जिनके खुद के बही खाते बिगड़े हुए हैं, वे भी हमसे हमारा हिसाब लिए फिरते हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, इस अविश्वास प्रस्ताव में कुछ चीजें ऐसी विचित्र नजर आईं, न पहले कभी सुना है, न कभी देखा है, न कल्पना की है। सबसे बड़े विपक्षी दल का नेता को बोलने की सूची में नाम ही नहीं था। आप पिछला उदाहरण देखिए, वर्ष 1999 में वाजपेयी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया, शरद पवार साहब उस समय नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने डिबेट का नेतृत्व किया। वर्ष 2003 में अटल जी की सरकार थी, सोनिया जी विपक्ष की नेता थीं, उन्होंने लीड किया, विस्तार से अविश्वास प्रस्ताव रखा। वर्ष 2018 में खड़गे जी विपक्ष के नेता थे, उन्होंने प्रोमिनेंटली विषय को आगे बढ़ाया। लेकिन इस बार अधीर बाबू का क्या हाल हो गया? उनकी पार्टी ने उन्हें बोलने का मौका ही नहीं दिया । कल अमित भाई ने बहुत जिम्मेवारी के साथ कहा कि अच्छा नहीं लग रहा है और अध्यक्ष महोदय आपकी उदारता थी कि उनका समय समाप्त हो गया था तब भी आपने उन्हें बोलने का मौका दिया। लेकिन गुड़ का गोबर कैसे करना है, इसमें ये माहिर हैं।

मैं नहीं जानता हूं कि आखिर आपकी मजबूरी क्या है? क्यों अधीर बाबू को दरकिनार कर दिया? पता नहीं, कोलकाता से कोई फोन आया हो। ... (व्यवधान) कांग्रेस बार-बार उनका अपमान करती है।

**श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर):** प्रधानमंत्री जी, इधर-उधर की बातें मत कीजिए।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस बार-बार इनका अपमान करती है। कभी चुनाव के नाम पर उन्हें स्थायी रूप से फ्लोर लीडर से हटा देते हैं। ... (व्यवधान) हम अधीर बाबू के प्रति पूरी संवेदना व्यक्त करते हैं। ... (व्यवधान)

किसी भी देश के इतिहास में एक समय ऐसा आता है, जब वह पुरानी बंदिशों को तोड़ कर एक नई ऊर्जा के साथ, एक नई उमंग के साथ, नए सपने के साथ, नए संकल्प के साथ आगे बढ़ने के लिए कदम उठा लेता है। मैं बहुत गंभीरता से लोकतंत्र के इस पवित्र मंदिर में बोल रहा हूं और लंबे अनुभव के बाद बोल रहा हूं। इक्कीसवीं सदी का कालखंड इस सदी का वह कालखंड है, जो भारत के लिए हर सपने को सिद्ध करने का अवसर हमारे चरण में है। हम सब ऐसे टाइम पीरियड में हैं, चाहें हम हैं या आप हैं या देश के कोटि-कोटि जन है, यह टाइम पीरियड बहुत अहम है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। बदलते हुए विश्व में, मैं इन शब्दों को बड़े विश्वास से कहना चाहता हूं कि यह कालखंड जो घड़ेगा, उसका प्रभाव इस देश पर आने वाले 1000 साल तक रहने वाला है। 140 करोड़ देशवासियों का पुरुषार्थ, इस कालखंड में, अपने पराक्रम से, अपने पुरुषार्थ से, अपनी शक्ति और सामर्थ्य से जो करेगा, वह आने वाले 1000 साल की मजबूत नींव रखने वाला है। इस कालखंड में हम सबका बहुत बड़ा दायित्व है, बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। ऐसे समय में हम सबका एक ही फोकस होना चाहिए - देश का विकास और देश के लोगों के सपनों को पूरा करने का संकल्प। उस संकल्प को सिद्धि तक ले जाने के लिए जी जान से जुट जाना, यही समय की मांग है। हमें 140 करोड़ देशवासी, इन भारतीय समुदायों की पूरी ताकत उस ऊंचाई पर पहुंचा सकती है। हमारे देश की युवा पीढ़ी के सामर्थ्य का विश्व ने लोहा माना हुआ है, इसलिए हम उन पर भरोसा करें। हमारी युवा

पीढ़ी जो सपने देख रही है, हमें उन सपनों को संकल्प के साथ सिद्धि तक पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है।

अध्यक्ष जी, वर्ष 2014 में 30 साल बाद देश की जनता ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई। वर्ष 2019 में भी उस ट्रैक रिकॉर्ड को देखकर उनके सपनों को संजोने का सामर्थ्य कहां है, उनके संकल्पों को सिद्ध करने की ताकत कहां है, इसे देश भली-भांति पहचान गया है। वर्ष 2019 में इसीलिए एक बार हम सबको सेवा करने का मौका दिया और अधिक मजबूती के साथ दिया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस सदन में बैठे हुए प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह भारत के युवाओं के सपनों को, उनकी महत्वाकांक्षाओं को, उनकी आशा-अपेक्षा के मुताबिक, वह जो काम करना चाहता है, अवसर दें। हमने सरकार में रहते हुए इस दायित्व को निभाने का भरपूर प्रयास किया है। हमने भारत के युवाओं को घोटालों से रहित सरकार दी है। हमने भारत के युवाओं को, आज के प्रोफेशनल्स को, खुले आसमान में उड़ने के लिए हौसला दिया है, अवसर दिया है।

हमने दुनिया में भारत की बिगड़ी हुई साख को संभाला है और उसे फिर एक बार नई उंचाइयों पर ले गए हैं। कुछ लोग अभी-भी कोशिश कर रहे हैं कि दुनिया में हमारी साख को दाग लग जाए, लेकिन दुनिया देश को जान चुकी है। दुनिया के भविष्य में भारत इस प्रकार से योगदान दे सकता है, विश्व का यह विश्वास बढ़ता चला जा रहा है।

इस दौरान हमारे विपक्ष के साथियों ने क्या किया? जब इतना अनुकूल वातावरण है, चारों तरफ संभावनाएं ही संभावनाएं हैं, इन्होंने अविश्वास के प्रस्ताव की आड़ में जनता के आत्मविश्वास को तोड़ने की विफल कोशिश की।

आज भारत के युवा रिकॉर्ड संख्या मे नये स्टार्ट-अप लेकर दुनिया को चकित कर रहे हैं। आज भारत में रिकॉर्ड विदेशी निवेश आ रहा है। ... (व्यवधान) आज भारत का एक्सपोर्ट नई बुलंदी को छू रहा है। आज भारत की कोई भी अच्छी बात ये सुन नहीं सकते हैं। ... (व्यवधान) यही उनकी अवस्था है। आज गरीब के दिल में अपने सपने पूरा करने का भरोसा पैदा हुआ है। ... (व्यवधान)

आज देश में गरीबी तेजी से घट रही है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पिछले पाँच सालों में साढ़े तेरह करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आईएमएफ अपने एक वर्किंग पेपर में लिखता है कि भारत ने अति गरीबी को करीब-करीब खत्म कर दिया है। आईएमएफ ने भारत के डीबीटी और हमारे दूसरे सोशल वेलफेयर स्कीम के लिए कहा है कि यह लॉजिस्टिकल मार्बल है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, डब्ल्यूएचओ ने कहा है कि 'जल जीवन मिशन' के जरिए भारत में चार लाख लोगों की जान बच रही है। ये चार लाख लोग कौन हैं? वे मेरे गरीब, पीड़ित, शोषित और वंचित परिवारों के स्वजन हैं। हमारे परिवार के निचले तबके में जिन्दगी गुजराने के लिए जो मजबूर हुए, वे उनके जन हैं। ऐसे चार लाख लोगों की जान बचने की बात डब्ल्यूएचओ कह रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, डब्ल्यूएचओ 'स्वच्छ भारत अभियान' का एनालिसिस करके कहता है कि 'स्वच्छ भारत अभियान' से तीन लाख लोगों को मरने से बचाया गया है। भारत स्वच्छ होता है और तीन लाख लोगों की जिन्दगी बचती है, लेकिन तीन लाख लोग कौन हैं? वे वही लोग हैं, जो झुग्गी-झोपड़ी में जिन्दगी जीने के लिए मजबूर हैं, जिनको अनेक कठिनाइयों में गुजारा करना पड़ता है, वे मेरे गरीब परिवार के लोग हैं। वे शहरों की बस्तियों में गुजारा करने वाले लोग हैं, गाँव में जीने वाले लोग हैं और वंचित तबके के लोग हैं, जिनकी जान बची है। यूनिसेफ ने क्या कहा है? यूनिसेफ ने कहा है कि 'स्वच्छ भारत अभियान' के कारण हर साल गरीबों के पचास हजार रुपये बच रहे हैं। … (व्यवधान) लेकिन, भारत की इन उपलब्धियों से कांग्रेस समेत विपक्ष के कुछ दलों को अविश्वास है। जो सच्चाई दुनिया दूर से देख रही है, ये लोग यहां रहते हैं, दिखती नहीं है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, अविश्वास और घमंड इनकी रगों में रच-बस गया है।… (व्यवधान) वे जनता के विश्वास को कभी देख नहीं पाते हैं। अब ये जो शुतुरमुर्ग अप्रोच है, इसके लिए देश क्या कर सकता है?

आदरणीय अध्यक्ष जी, जो पुरानी सोच वाले लोग होते हैं, मैं उस सोच से सहमत नहीं हूं। लेकिन कहते हैं कि देखो भाई, जब कुछ शुभ होता है, कुछ मंगल होता है, घर में भी कुछ अच्छा

होता है, जब बच्चे भी कुछ अच्छे कपड़े पहनते हैं, ज़रा साफ-सुथरा होता है, तो काला टीका लगा देते हैं। आज चारों तरफ देश का जो मंगल हो रहा है, देश की जो चारों तरफ वाहवाही हो रही है, देश का जो जय-जयकार हो रहा है, तो मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि काले टीके के रूप में काले कपड़े पहनकर सदन में आकर आपने इस मंगल को भी सुरक्षित करने का काम किया है। इसके लिए भी मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछले तीन दिनों से हमारे विपक्ष के साथियों ने जी-भर के, डिक्शनरी खोल-खोलकर जितने अपशब्द मिलते हैं, ले आए। जितने अपशब्दों का उपयोग कर सकते हैं, पता नहीं कहां-कहां से ले आते हैं, लेकिन अच्छा है। उनका थोड़ा मन का गुबार निकल गया होगा, थोड़ा मन हल्का हुआ होगा, इतने अपशब्द बोल लिए हैं तो। वैसे तो ये लोग मुझे दिन-रात कोसते रहते हैं। उनकी यह फितरत है। उनके लिए तो सबसे प्रिय नारा क्या है – मोदी तेरी कब्र खुदेगी, मोदी तेरी कब्र खुदेगी, मोदी तेरी कब्र खुदेगी। …(व्यवधान)

यह इनका पसंदीदा नारा है, लेकिन मेरे लिए इनकी ये गालियां, ये अपशब्द, ये अलोकतांत्रिक भाषा, मैं उसका भी टॉनिक बना देता हूं। ये ऐसा क्यों करते हैं और ये क्यों होता है? आज मैं सदन में कुछ सीक्रेट बताना चाहता हूं। मेरा पक्का विश्वास हो गया है कि विपक्ष के लोगों को एक सीक्रेट वरदान मिला हुआ है। वह वरदान यह है कि ये लोग जिसका भी बुरा चाहेंगे, उसका भला ही होगा। एक उदाहरण तो आप देखिए, मौजूद है। 20 साल हो गए, क्या कुछ नहीं हुआ, क्या कुछ नहीं किया गया, लेकिन भला ही होता गया। आपको बड़ा सीक्रेट वरदान मिला हुआ है। मैं तीन उदाहरण से इस सीक्रेट वरदान को सिद्ध कर सकता हूं।

आपको ध्यान होगा कि इन लोगों ने बैंकिंग सेक्टर के लिए कहा था कि बैंकिंग सेक्टर डूब जाएगा, बैंकिंग सेक्टर तबाह हो जाएगा, देश खत्म हो जाएगा, देश बर्बाद हो जाएगा। न जाने क्या-क्या कहा था। बड़े-बड़े विद्वानों को विदेशों से ले आते थे, उनसे कहलवाते थे, ताकि कोई इनकी बात न माने, तो शायद उनकी बात मान ले। इन्होंने हमारे बैंकों की सेहत को लेकर भांति-भांति की निराशा और अफवाह फैलाने का काम पुरजोर किया। जब इन्होंने बैंकों का बुरा चाहा, तो क्या

हुआ? हमारे पब्लिक सेक्टर बैंक्स का नेट प्रॉफिट दो गुने से ज्यादा हो गया। इन लोगों ने फोन बैंकिंग घोटाले की बात की। इसके कारण देश को एनपीए के गंभीर संकट में डुबो दिया था।

बीते दिनों की बात हो रही है, लेकिन आज जो एनपीए का अम्बार लगाकर गए थे, उसको भी पार करके हम एक नई ताकत के साथ निकल चुके हैं। आज सुबह निर्मला जी ने विस्तार से बताया है कि कितना प्रॉफिट हुआ है। दूसरा उदाहरण हमारे डिफेंस के हेलीकॉप्टर बनाने वाली सरकारी कंपनी एचएएल है। इन्होंने एचएएल को लेकर कितनी भली-बुरी बातें की थीं। ... (व्यवधान) एचएएल के लिए क्या कुछ नहीं बोला गया था। दुनिया पर बहुत नुकसान करने वाली भाषा का प्रयोग किया गया था कि एचएएल तबाह हो गया है, एचएएल खत्म हो गया है, भारत की डिफेंस इंडस्ट्री खत्म हो चुकी है, ऐसा न जाने एचएएल के लिए क्या-क्या कहा गया था। इतना ही नहीं, जैसे आजकल खेतों में जाकर वीडियो शूट होता है, मालूम है न, खेतों में जाकर वीडियो शूट होता है, वैसा ही उस समय एचएएल फैक्ट्री के दरवाजे पर मजदूरों की सभा करके वीडियो शूट करवाया गया था और वहां के कामगारों को भड़काया गया था कि अब तुम्हारा कोई भविष्य नहीं है, तुम्हारे बच्चे मरेंगे, भूखे मरेंगे, एचएएल डूब रहा है। देश के इतने महत्वपूर्ण इंस्टीट्यूट के लिए इतना बुरा चाहा, इतना बुरा चाहा, इतना बुरा कहा कि वह सीक्रेट, आज एचएएल सफलता की नई बुलंदियों को छू रहा है। एचएएल ने अपना एवर हाइएस्ट रेवेन्यु रजिस्टर किया है। इनके जी भरकर गम्भीर आरोपों के बावजूद भी वहां के कामकारों को, वहां के कर्मचारियों को उकसाने की भरपूर कोशिश के बावजूद भी आज एचएएल देश की आन-बान-शान बनकर उठ रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये जिसका बुरा चाहते हैं, वह कैसे आगे बढ़ता है, मैं तीसरा उदाहरण देता हूं। आप जानते हैं कि एलआईसी के लिए क्या-क्या कहा गया था कि एलआईसी बर्बाद हो गई है, गरीबों के पैसे डूब रहे हैं, गरीब कहां जाएगा, बेचारे ने बड़ी मेहनत से एलआईसी में पैसा डाला है। जितनी उनकी कल्पना शक्ति थी, जितने उनके दरबारियों ने कागज पकड़ा दिए, सारा बोल लेते थे, लेकिन आज एलआईसी लगातार मजबूत हो रही है। शेयर मार्केट में रुचि रखने वालों को भी यह एक गुरू मंत्र है कि जिन सरकारी कंपनियों को ये लोग गाली दें तो आप उनमें दांव

लगा दीजिए, शायद अच्छा हो जाएगा। ये लोग देश की जिन संस्थाओं की मृत्यु की घोषणा करते हैं, उन संस्थाओं का भाग्य चमक जाता है। मुझे विश्वास है कि जैसे ये देश को कोसते हैं, लोकतंत्र को कोसते हैं, मेरा पक्का विश्वास है कि देश भी मजबूत होने वाला है, लोकतंत्र भी मजबूत होने वाला है और हम तो होने ही वाले हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये वे लोग हैं, जिन्हें देश की सामर्थ्य पर विश्वास नहीं है, इन लोगों को देश के परिश्रम पर विश्वास नहीं है, देश के पराक्रम पर विश्वास नहीं है। कुछ दिन पहले मैंने कहा था कि हमारी सरकार के अगले टर्म में, तीसरे टर्म में भारत दुनिया की तीसरी टॉप अर्थव्यवस्था बनेगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, अगर देश के भविष्य पर थोड़ा सा भी भरोसा होता, जब हम यह क्लेम करते हैं कि हम आने वाले पांच साल में, तीसरे टर्म में देश की इकोनॉमी को तीसरे स्थान पर लाएंगे तो एक जिम्मेवार विपक्ष क्या करता? वह सवाल पूछता कि अच्छा बताइए, निर्मला जी बताइए कि कैसे करने वाले हैं, मोदी जी बताइए कि कैसे करने वाले हैं? आपका रोडमैप बताइए। ऐसा करते, लेकिन अब यह भी मुझे ही सिखाना पड़ रहा है।... (व्यवधान) या ये कुछ सुझाव दे सकते थे। ये कुछ सुझाव दे सकते थे या फिर कहते कि हम चुनाव में जनता के बीच जाकर के बताएंगे कि ये तीसरे की बात करते हैं, हम तो एक नम्बर पर लेकर आएंगे और ऐसे-ऐसे लेकर आएंगे। कुछ तो करते यार। लेकिन हमारे विपक्ष की त्रासदी ही यही है और उनके राजनीतिक विमर्श पर गौर कीजिए, कांग्रेस के लोग क्या कह रहे हैं? आप देखिए कि कितना कल्पना दारिद्र्य है? इतने सालों तक सत्ता में रहने के बाद भी क्या अनुभवहीन बातें सुनने को मिल रही हैं। ये क्या कहते हैं, ये कहते हैं कि इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है, तीसरे नम्बर पर ऐसे ही होने वाला है।

मुझे लगता है कि इसी सोच के कारण वे इतने सालों तक सोते रहे कि अपने आप होने वाला है। वे कहते हैं कि बिना कुछ किए तीसरे स्थान पर पहुंच जाएंगे और कांग्रेस की मानें कि अगर सब कुछ अपने आप ही हो जाने वाला है तो इसका मतलब है कि कांग्रेस के पास न नीति है, न

नीयत है, न विजन है, न वैश्विक अर्थव्यवस्था की समझ है और न ही भारत के अर्थजगत की ताकत का पता है। इसलिए सोए-सोए सब हो जाएगा, यही एक वजह है कि कांग्रेस के शासन में भारत गरीबी और गरीबी को बढ़ाता गया। 1991 में देश कंगाल होने की स्थिति में था। कांग्रेस के शासन काल में अर्थव्यवस्था दुनिया के क्रम में 10, 11, 12 के बीच में झोले खाती थी। झूलती रही थी, लेकिन 2014 के बाद भारत ने टॉप पांच में अपनी जगह बना ली है।

कांग्रेस के लोगों को लगता होगा कि यह कोई जादू की लकड़ी से हुआ है, लेकिन मैं आज सदन को बताना चाहता हूँ, रिफॉर्म, परफॉर्म एंड ट्रॉन्सफॉर्म, एक निश्चित आयोजन, प्लानिंग और कठोर परिश्रम, परिश्रम की पराकाष्ठा, इसी की वजह से आज देश इस मुकाम पर पहुंचा है।... (व्यवधान) यह प्लानिंग और परिश्रम की निरंतरता बनी रहेगी। आवश्यकतानुसार उसमें नए रिफॉर्म्स होंगे और परफॉर्मेंस के लिए पूरी तरह ताकत को लगाया जाएगा और परिणाम यह होगा कि हम तीसरे नम्बर पर पहुंचकर रहेंगे ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं देश का विश्वास शब्दों में भी प्रकट करना चाहता हूं और देश का विश्वास है कि वर्ष 2028 में आप जब अविश्वास प्रस्ताव लेकर आएंगे, तब यह देश पहले तीन में होगा। यह देश का विश्वास है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारे विपक्ष के मित्रों की फितरत में ही अविश्वास भरा पड़ा है। हमने लाल किले से स्वच्छ भारत अभियान का आह्वान किया, लेकिन उन्होंने हमेशा अविश्वास जताया है कि कैसे हो सकता है? गांधी जी आए, कह कर गए, क्या हुआ? अब स्वच्छता कैसे हो सकती है? अविश्वास से भरी हुई, इनकी सोच है। हमने मां-बेटी को खुले में शौच से मुक्त करने के लिए, उस मजबूरी से मुक्त होने के लिए शौचालय जैसी जरूरत पर जोर दिया है। तब ये कह रहे हैं कि क्या लाल किले से ऐसे विषय बोले जाते हैं? क्या यह देश की प्राथमिकता होती है?

हमने जब जन-धन खाते खोलने की बात की, तब भी यही बात निराशा की - क्या होता है, जन-धन खाता, उनके हाथ में पैसे कहां हैं? उनकी जेब में क्या पड़ा है, वे क्या लेकर आएंगे, क्या करेंगे? हमने योग की बात की, हमने आयुर्वेद की बात की, हमने उसको बढ़ावा देने की बात की, तो

उसका भी माखौल उड़ाया गया। हमने स्टार्टअप इंडिया की चर्चा की, तो उन्होंने उसके लिए भी निराशा फैलाई । स्टार्टअप तो कोई हो ही नहीं सकता है। हमने डिजिटल इंडिया की बात कही, तो बड़े-बडे विद्वान लोगों ने क्या भाषण किए – हिन्दुस्तान के लोग अनपढ़ हैं। हिन्दुस्तान में मोबाइल चलाना भी नहीं आता है। हिन्दुस्तान के लोग कहां से डिजिटल करेंगे।...(व्यवधान) आज डिजिटल इंडिया, देश आगे है।...(व्यवधान) हमने मेक इन इंडिया की बात कही, जहां गए वहां मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया।...(व्यवधान) जहां गए वहां मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस पार्टी और उनके दोस्तों का इतिहास रहा है कि उन्हें भारत पर, भारत के सामर्थ्य पर कभी भी भरोसा नहीं रहा है।...(व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** भाषण पूरा नहीं हुआ है, नो ।

... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** आदरणीय अध्यक्ष जी, ये विश्वास किस पर करते थे ।...(व्यवधान) मैं जरा आज सदन को याद दिलाना चाहता हूं। पाकिस्तान सीमा पर हमले करता था। हमारे यहां आए दिन आतंकवादी भेजे जाते थे और उसके बाद पाकिस्तान हाथ ऊपर करके मुकर जाता था, भाग जाता था, बोले की हमारी तो कोई जिम्मेवारी नहीं है। कोई जिम्मा लेने को तैयार नहीं होता था और इनका पाकिस्तान से ऐसा प्रेम था, वह तुरंत पाकिस्तान की बातों पर विश्वास कर लेते थे। पाकिस्तान कहता था कि आतंकी हमले होते रहेंगे और बातचीत भी होती रहेगी । यहां तक कहते कि पाकिस्तान कह रहा है, तो सही कह रहा होगा, ये इनकी सोच रही है। कश्मीर आतंकवाद की आग में दिन-रात सुलग रहा था, जलता था, लेकिन कांग्रेस सरकार का काम, कश्मीर और कश्मीर के आम नागरिकों पर विश्वास नहीं था । वे हुर्रियत पर विश्वास करते थे । वे अलगाववादियों पर विश्वास करते थे। वे उन लोगों पर विश्वास करते थे जो पाकिस्तान का झंडा लेकर चलते थे ।

भारत ने आतंकवाद पर सर्जिकल स्ट्राइक किया, भारत ने एयर स्ट्राइक किया।... (व्यवधान) इनको भारत की सेना पर भरोसा नहीं था, उनको दुश्मन के दावों पर भरोसा था।... (व्यवधान) यह इनकी प्रवृत्ति थी।

अध्यक्ष महोदय, आज दुनिया में कोई भी भारत के लिए अपशब्द बोलता है तो इन्हें उस पर तुरंत विश्वास हो जाता है, उसको तुरंत कैच कर लेते हैं।... (व्यवधान) ऐसी मैग्नेटिक पावर है कि भारत के खिलाफ हर चीज को वह पकड़ लेते हैं। जैसे कोई विदेशी एजेंसी कहती है कि भुखमरी का सामना कर रहे कई देश भारत से बेहतर हैं।... (व्यवधान) ऐसी झूठी बात आएगी, तो भी पकड़ लेते हैं और हिन्दुस्तान में प्रचार करना शुरू कर देते हैं। प्रेस कांफ्रेंस कर देते हैं। भारत को बदनाम करने में क्या मजा आता है? दुनिया में कोई भी ऐसी बेतुकी बातों को, मिट्टी के ढेले जैसी जिसकी कीमत न हो, ऐसी बातों को तवज्जो देना, यह कांग्रेस की फितरत रही है और तुरंत उसका भारत में एम्पलीफायर करना, प्रचार करना, पूरी कोशिश इसी में लग जाती है।... (व्यवधान) कोरोना की महामारी आई। भारत के वैज्ञानिकों ने मेड-इन-इंडिया वैक्सीन बनाई। उन्हें भारत की वैक्सीन पर भरोसा नहीं, विदेशी वैक्सीन पर भरोसा है। यह इनकी सोच रही है।... (व्यवधान) आदरणीय अध्यक्ष जी, देश के कोटि-कोटि नागरिकों ने भारत की वैक्सीन पर विश्वास जताया। इनको भारत के सामर्थ्य पर विश्वास नहीं है।... (व्यवधान) इनको भारत के लोगों पर विश्वास नहीं है, लेकिन इस सदन को मैं बताना चाहता हूं कि इस देश का भी, भारत के लोगों का कांग्रेस के प्रति नो कॉन्फिडेंस का भाव बहुत गहरा है। भारत के लोगों में कांग्रेस के प्रति नो कॉन्फिडेंस का भाव बहुत गहरा है। ... (व्यवधान) कांग्रेस अपने घमंड से इतनी चूर हो गई है, इतनी भर गई है कि उसको जमीन दिखाई तक देती नहीं है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश के कई हिस्सों में कांग्रेस को जीत दर्ज करने में अनेक दशक लग गए हैं।... (व्यवधान) तमिलनाडु में कांग्रेस की आखिरी बार 1962 में जीत हुई थी।... (व्यवधान) तमिलनाडु के लोग 61 वर्षों से कह रहे हैं – कांग्रेस नो कॉन्फिडेंस। तमिलनाडु के लोग कह रहे हैं कांग्रेस –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** उन्हें पश्चिम बंगाल में आखिरी बार जीत वर्ष 1972 में मिली थी। पश्चिम बंगाल के लोग 51 सालों से कह रहे हैं कांग्रेस –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** कांग्रेस –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** उत्तर प्रदेश, बिहार और गुजरात में कांग्रेस आखिरी बार वर्ष 1985 में जीती थी। पिछले 38 वर्षों से वहां के लोगों ने कांग्रेस को कहा है –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** वहां के लोगों ने कांग्रेस को कहा है –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** त्रिपुरा में उन्हें आखिरी बार वर्ष 1988 में जीत मिली थी। त्रिपुरा के लोग 35 वर्षों से कांग्रेस को कह रहे हैं –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस। ... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** कांग्रेस –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** कांग्रेस –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** ओडिशा में कांग्रेस को आखिरी बार वर्ष 1995 में जीत नसीब हुई थी यानी ओडिशा भी 28 वर्षों से कांग्रेस को एक ही जवाब दे रहा है। ओडिशा कह रहा है – नो कॉन्फिडेंस। ... (व्यवधान) कांग्रेस –

**कई माननीय सदस्य :** नो कॉन्फिडेंस।... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** नागालैंड में... (व्यवधान)

**18.00 hrs**

**माननीय अध्यक्ष :** यदि सदन की अनुमति हो, तो सभा की कार्यवाही इस विषय की समाप्ति तक बढ़ायी जाती है।

… (व्यवधान)

**अनेक माननीय सदस्य :** ठीक है।… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** माननीय सदस्यगण, मैंने पहले भी आग्रह किया था कि नारेबाजी न करें। इस पर आप सबने अपनी सहमति दी थी। आपने कहा था कि नारेबाजी नहीं करेंगे, न इधर से करेंगे, न उधर से करेंगे।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** दोनों तरफ से नारेबाजी नहीं करेंगे।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** आप लोगों ने स्वयं व्यवस्था दी थी कि सदन में नारेबाजी नहीं करेंगे। किसी भी तरफ से नारेबाजी नहीं करेंगे।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** माननीय प्रधानमंत्री जी।

… (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** आदरणीय अध्यक्ष जी, नागालैंड में कांग्रेस की आखिरी जीत वर्ष 1988 में हुई थी। यहाँ के लोग भी 25 वर्षों से कह रहे हैं कांग्रेस – नो कांफिडेंस, कांग्रेस – नो कांफिडेंस। … (व्यवधान) दिल्ली, आन्ध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल में तो एक भी विधायक खाते में नहीं है। जनता ने कांग्रेस के प्रति बार-बार 'नो कांफिडेंस' घोषित किया है। … (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, मैं आज इस मौके पर… (व्यवधान) मैं एक बात आपके काम की बताता हूँ। … (व्यवधान) मैं आपकी भलाई के लिए बोल रहा हूँ।… (व्यवधान) यह मैं आपकी भलाई के लिए बोल रहा हूँ।… (व्यवधान) आप लोग थक जाएंगे।… (व्यवधान) मैं आपकी भलाई की बात बताता

हूँ। ... (व्यवधान) मैं आज इस मौके पर हमारे विपक्ष के साथियों के प्रति अपनी संवेदना भी व्यक्त करना चाहता हूँ।... (व्यवधान) कुछ ही दिन पहले बैंगलुरू में आपने मिल-जुलकर करीब-करीब डेढ़-दो दशक पुराने यूपीए का क्रियाकर्म किया है, उसका अंतिम संस्कार किया है। लोकतांत्रिक व्यवहार के मुताबिक मुझे तभी आपको सहानुभूति व्यक्ति करनी चाहिए थी, संवेदना व्यक्त करनी चाहिए थी। लेकिन इस देरी में मेरा कसूर नहीं है। ... (व्यवधान) देरी में मेरा कसूर नहीं है। ... (व्यवधान) क्योंकि आप खुद ही एक ओर यूपीए का क्रियाकर्म कर रहे थे और दूसरी ओर जश्न भी मना रहे थे।... (व्यवधान) जश्न भी किस बात का? खण्डहर पर प्लास्टर लगाने का। ... (व्यवधान) आप जश्न मना रहे थे, खण्डहर पर नया प्लास्टर लगाने का। ... (व्यवधान) आप जश्न मना रहे थे, फेल मशीन पर नया पेंट लगाने का।... (व्यवधान) दशकों पुरानी खटारा गाड़ी को इलेक्ट्रिक व्हीकल दिखाने के लिए आपने इतना बड़ा मजमा लगाया था।... (व्यवधान) मज़ेदार बात यह है कि मजमा खत्म होने के पहले ही उसका क्रेडिट लेने के लिए आप लोगों में सिर-फुटव्वल शुरू हो गयी।... (व्यवधान) मैं हैरान था कि यह गठबंधन लेकर आप जनता के बीच में जाएंगे।... (व्यवधान) मैं विपक्ष के साथियों को कहना चाहता हूँ, आप जिसके पीछे चल रहे हो... (व्यवधान) आप जिसके पीछे चल रहे हो, उसको तो इस देश की ज़ुबान और इस देश के संस्कार की समझ ही नहीं बची है।... (व्यवधान)

पीढ़ी दर पीढ़ी ये लोग लाल मिर्च और हरी मिर्च का फर्क नहीं समझ पाए। ... (व्यवधान) लेकिन आपमें से कई साथियों को मैं जानता हूं। ... (व्यवधान) आप सब तो भारतीय मानस को जानने वाले लोग हैं। ... (व्यवधान) आप लोग भारत के मिजाज़ को पहचानने वाले लोग हैं। ... (व्यवधान) भेष बदलकर धोखा देने वालों की हकीकत सामने आ ही जाती है। ... (व्यवधान) जिन्हें सिर्फ नाम का सहारा है, उन्हीं के लिए कहा गया है –

दूर युद्ध से भागते, नाम रखा रणधीर
भाग्यचंद की आज तक, सोई है तकदीर।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इनकी मुसीबत ऐसी है कि खुद को जिंदा रखने के लिए इनको एनडीए का ही सहारा लेना पड़ा है। ... (व्यवधान) लेकिन आदत के मुताबिक घमंड का जो 'आई' है, वह उनको छोड़ता नहीं है। ... (व्यवधान) इसलिए, एनडीए में दो 'आई' पिरो दिए । ... (व्यवधान) दो घमंड के 'आई' पिरो दिए। ... (व्यवधान) पहला 'आई' 26 दलों का घमंड और दूसरा 'आई' एक परिवार का घमंड। ... (व्यवधान) एनडीए भी चुरा लिया, खुद बचने के लिए और इंडिया के भी टुकड़े कर दिए। ... (व्यवधान) I.N.D.I.A ... (व्यवधान)

आदरणीय, जरा हमारे डीएमके के भाई सुन लें, जरा कांग्रेस के लोग भी सुन लें । ... (व्यवधान) यूपीए को लगता है कि देश के नाम का इस्तेमाल करके अपनी विश्वसनीयता बढ़ाई जा सकती है। ... (व्यवधान) लेकिन कांग्रेस के सहयोगी दल, कांग्रेस के अटूट साथी, तमिलनाडु सरकार में एक मंत्री ने दो दिन पहले ही यह कहा है, तमिलनाडु सरकार के एक मंत्री ने कहा है – इंडिया उनके लिए कोई मायने नहीं रखता। ... (व्यवधान) उनके मुताबिक तमिलनाडु तो भारत में है ही नहीं । ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज मैं गर्व के साथ कहना चाहता हूं, तमिलनाडु वह प्रदेश है, जहां से हमेशा देशभक्ति की धाराएं निकली हैं। ... (व्यवधान) जिस राज्य ने हमें राजा जी दिए, जिस राज्य ने हमें कामराज जी दिए, जिस राज्य ने हमें एम.जी.आर दिए, जिस राज्य ने हमें अब्दुल कलाम दिए। ... (व्यवधान) आज उस तमिलनाडु से ये स्वर सुनाई दे रहे हैं। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब आपके अलायंस में अंदर ही अंदर ऐसे लोग हों, जो अपने देश के अस्तित्व को नकारते हों, तो आपकी गाड़ी कहाँ जाकर रूकेगी, जरा आत्मचिंतन करने का मौका मिले और आत्मा बची हो तो जरूर करिएगा ।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, नाम को लेकर उनका यह चश्मा आज का नहीं है। नाम को लेकर यह जो मोह है, यह उनका आज का नहीं है। यह दशकों पुराना चश्मा है।... (व्यवधान) इन्हें लगता है कि नाम बदलकर देश पर राज कर लेंगे। गरीब को चारों तरफ उनका नाम तो नजर आता है, लेकिन उनका काम कहीं नजर नहीं आता है। अस्पतालों में नाम उनके हैं, इलाज नहीं है। शैक्षणिक

संस्थाएं, नाम लटक रहे हैं, सड़कें हों, पार्क हो, उनका नाम, गरीब कल्याण की योजनाओं पर उनका नाम, खेल पुरस्कारों पर उनका नाम, एयरपोर्ट पर उनका नाम, म्यूजियम पर उनका नाम, अपने नाम से योजनाएं चलायीं और फिर उन योजनाओं में हजारों करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार किए। समाज के अंतिम छोर पर खड़ा व्यक्ति काम होते देखना चाहता था, लेकिन उसे मिला क्या, सिर्फ और सिर्फ परिवार का नाम।

अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस की पहचान से जुड़ी कोई चीज उनकी अपनी नहीं है। कोई चीज उनकी अपनी नहीं है। चुनाव चिन्ह से लेकर विचारों तक सब कुछ कांग्रेस अपना होने का दावा करती है, वह किसी और से लिया हुआ है।

**माननीय अध्यक्ष :** माननीय सदस्य, कृपया अपनी सीट पर जाइए।

… (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** आदरणीय अध्यक्ष जी, अपनी कमियों को ढकने के लिए चुनाव चिन्ह और विचारों को भी चुरा लिया।… (व्यवधान) फिर भी जो बदलाव हुए हैं, … (व्यवधान) उसमें पार्टी का घमंड ही दिखता है।… (व्यवधान) यह भी दिखता है कि वर्ष 2014 से वे किस तरह डिनायल के मोड में हैं।… (व्यवधान) पार्टी के संस्थापक कौन, ए.ओ.ह्यूम, एक विदेशी थे, जिन्होंने पार्टी बनायी।… (व्यवधान) आप जानते हैं 1920 में भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई ऊर्जा मिली।… (व्यवधान) 1920 में एक नया ध्वज मिला और देश ने उस ध्वज को अपना लिया, तो रातोंरात कांग्रेस ने उस ध्वज की ताकत देखकर उसे भी छीन लिया और प्रतीक को देखा कि यह गाड़ी चलाने के लिए ठीक रहेगा, 1920 से यह खेल चल रहा है। उनको लगा कि तिरंगा झंडा देखेंगे तो लोग देखेंगे उनकी बात हो रही है, यह उन्होंने खेल किया। वोटरों को बुलाने के लिए गांधी नाम भी,… (व्यवधान) हर बार वह भी चुरा लिया। कांग्रेस के चुनाव चिन्ह देखिए, दो बैल, गाय-बछड़ा और फिर हाथ का पंजा।

अध्यक्ष जी, ये सारे उनके कारनामे हैं। उनकी हर प्रकार की मनोवृत्ति का प्रतिबिम्ब करता है, उसे प्रकट करते हैं और यह साफ दिखाता है कि सब कुछ एक परिवार के हाथों में सब केंद्रित

हो चुका है।... (व्यवधान) अध्यक्ष जी, यह 'इंडिया' गठबंधन नहीं है, यह 'घमंडिया' गठबंधन है। यह 'इंडिया' गठबंधन नहीं है, यह 'घमंडिया' गठबंधन है और इसकी बारात में हर कोई दूल्हा बनना चाहता है। सभी को प्रधान मंत्री बनना है।... (व्यवधान) अध्यक्ष जी, इस गठबंधन ने यह भी नहीं सोचा है कि किस राज्य में आप किसके साथ कहां पहुंचे हैं। पश्चिम बंगाल में आप टीएमसी और कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ हैं और दिल्ली में एक साथ हैं। अधीर बाबू, 1991 का पश्चिम बंगाल विधान सभा का चुनाव, इन्हीं कम्युनिस्ट पार्टी ने अधीर बाबू के साथ क्या व्यवहार किया था, वह आज भी इतिहास में दर्ज है। वर्ष 1991 की बात तो पुरानी है, पिछले साल केरल के वायनाड में जिन लोगों ने कांग्रेस के कार्यालय में तोड़फोड़ की, ये लोग उनके साथ दोस्ती करके बैठे हैं। बाहर से तो ये अपना लेबल बदल सकते हैं, लेकिन पुराने पापों का क्या होगा, यही पाप आपको लेकर डूबेंगे। आप जनता जनार्दन से ये पाप कैसे छिपा पाओगे। आप नहीं छिपा सकते हो और इनकी आज जो हालत है, उसके लिए मैं कहना चाहता हूं कि अभी हालात ऐसे हैं इसलिए हाथों में हाथ, जहां हालात बदले, तो फिर छुरियां भी निकलेंगी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये 'घमंडिया' गठबंधन देश में परिवारवाद की राजनीति का सबसे बड़ा प्रतिबिम्ब है। देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने, हमारे संविधान निर्माताओं ने हमेशा परिवारवादी राजनीति का विरोध किया था। महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, बाबा साहब अम्बेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आजाद, गोपीनाथ बोरदोलोई, लोकनायक जय प्रकाश, डॉ. लोहिया इत्यादि आप जितने भी नाम देखेंगे, सभी ने परिवारवाद की खुलकर आलोचना की है क्योंकि परिवारवाद का नुकसान देश के सामान्य नागरिकों को उठाना पड़ता है। परिवारवाद सामान्य नागरिक के हकों, उसके अधिकारों से वंचित करता है इसलिए इन विभूतियों ने हमेशा इस बात पर जोर दिया था कि देश को परिवार, नाम और पैसे पर आधारित व्यवस्था से हटना ही होगा।... (व्यवधान) लेकिन कांग्रेस को हमेशा यह बात पसंद नहीं आई।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने यह बराबर देखा है कि परिवारवाद का विरोध करने वालों के प्रति इनके मन में कैसे नफरत के भाव थे। कांग्रेस को परिवारवाद पसन्द है, कांग्रेस को दरबारवाद

पसन्द है, जहां बड़े लोग, उनके बेटे-बेटियां भी बड़े पदों पर काबिज हों। जो परिवार से बाहर है, उनके लिए भी यही है कि जब तक आप इस महफिल में दरबारी नहीं बनेंगे, तो आपका भी कोई भविष्य नहीं है, यही उनकी कार्य शैली रही है। इस दरबार सिस्टम ने कई विकेट्स लिए हैं, कितनों का हक मारा है इन लोगों ने।

कांग्रेस ने जी-जान लगाकर बाबा साहेब अम्बेडकर को दो बार हरवाया । कांग्रेस के लोग बाबा साहेब अम्बेडकर के कपड़ों का मजाक उड़ाते थे । ये वे लोग हैं। बाबू जगजीवन राम ने इमरजेंसी पर सवाल उठाए, तो बाबू जगजीवन राम को भी उन्होंने नहीं छोड़ा, उन्हें प्रताड़ित किया । मोरारजी भाई देसाई, चरण सिंह, चन्द्र शेखर जी, आप कितने ही नाम लीजिए, दरबारवाद के कारण देश के महान लोगों के अधिकारों को इन्होंने हमेशा-हमेशा के लिए तबाह कर दिया ।

यहां तक कि जो दरबारी नहीं थे, जो दरबारवाद से जुड़े नहीं थे, उनके पोर्ट्रेट तक को पार्लियामेंट में लगाने में इन्हें झिझक होती थी । वर्ष 1990 में उनके पोर्ट्रेट सेन्ट्रल हॉल में तब लगे, जब बीजेपी समर्थित गैर कांग्रेसी सरकार सामने आई। लोहिया जी की पोर्ट्रेट भी संसद में तब लगी, जब वर्ष 1991 में गैर कांग्रेसी सरकार बनी। नेताजी की पोर्ट्रेट 1978 में सेन्ट्रल हॉल में लगाई, जब जनता पार्टी की सरकार थी । लाल बहादुर शास्त्री और चरण सिंह के पोर्ट्रेट भी वर्ष 1993 में गैर परिवार की सरकार में लगे । सरदार पटेल के योगदान को भी कांग्रेस ने हमेशा नकारा । सरदार साहब को समर्पित विश्व की सबसे ऊंची स्टैच्यू ऑफ यूनिटी प्रतिमा बनाने का गौरव भी हमें प्राप्त हुआ। हमारी सरकार ने दिल्ली में पी.एम. म्यूज़ियम बनाया। सारे पूर्व प्रधान मंत्रियों को सम्मान दिया। पी.एम. म्यूज़ियम दल और पार्टी से ऊपर उठ कर सभी प्रधान मंत्रियों को समर्पित है। उन्हें यह भी नहीं पच रहा है, क्योंकि उनके परिवार के बाहर का कोई भी प्रधान मंत्री बने, यह उन्हें मंजूर नहीं है, उन्हें स्वीकार नहीं है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बहुत बार कुछ बुरा बोलने के इरादे से बोलने की कोशिश होती है तो कुछ न कुछ सच निकल जाता है। सच में, ऐसे अनुभव हम सबको है। कभी-कभी सच निकल जाता है। 'लंका हनुमान ने नहीं जलाई, रावण के घमंड ने जलाई' – यह बिल्कुल सच है। आप

देखिए कि जनता जनार्दन भी भगवान राम के रूप में है, इसलिए आप 400 से 40 हो गए। 'हनुमान ने लंका नहीं जलाई, घमंड ने जलाई', इसलिए आप 400 से 40 हो गए।... (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, सच्चाई तो यह है कि देश की जनता ने 30 सालों के बाद 2-2 बार पूर्ण बहुमत की सरकार चुनी है। लेकिन गरीब का बेटा यहां कैसे बैठा है, यह इनको हज़म नहीं हो रहा है। ... (व्यवधान) आपको जो हक़ था, आप अपनी पारिवारिक पीढ़ी मानते थे, वह बेटा यहां कैसे बैठ गया, यह चुभन अभी भी आपको परेशान कर रही है। ... (व्यवधान) आपको सोने नहीं देती है। ... (व्यवधान) देश की जनता भी आपको सोने नहीं देगी। ... (व्यवधान) वर्ष 2024 में भी सोने नहीं देगी। ... (व्यवधान) आदरणीय अध्यक्ष जी, कभी इनके जन्मदिन पर हवाई जहाज़ में केक काटे जाते थे। ... (व्यवधान) आज उस हवाई जहाज़ में गरीब के लिए वैक्सीन जाती है। यह फर्क है। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक ज़माना था कि कभी ड्राईक्लीन के लिए कपड़े हवाई जहाज़ से आते थे। आज हवाई चप्पल वाला गरीब हवाई जहाज़ में उड़ रहा है। अध्यक्ष जी, कभी छुट्टी मनाने के लिए, मौज-मस्ती करने के लिए नौसेना के युद्धपोत मंगवा लेते थे। आज उसी नौसेना के जहाज़, सुदूर देशों में फंसे भारतीयों को अपने घर लाने के लिए, गरीबों को अपने घर लाने के लिए उपयोग में आते हैं। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, जो लोग आचार, व्यवहार, चाल-चरित्र से राजा बन गए हों, आधुनिक राजा के रूप में ही जिनका दिमाग काम करता हो, उन्हें गरीब का बेटा यहां होने से परेशानी होनी ही होनी है। ... (व्यवधान) आखिर ये नामदार लोग हैं, और हम कामदार लोग हैं। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, कुछ बातें बहुत ही समय पर मुझे कहने का अवसर मिलता है। बहुत सी बातें ऐसी होती हैं। मैं तो तय कर के बैठता नहीं हूँ। लेकिन इत्तेफ़ाक देखिए, कल यहां दिल से बात करने की बात भी कही गई। उनके दिमाग के हाल को तो देश लंबे समय से जानता है। लेकिन अब उनके दिल का भी पता चल गया है। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, इनका मोदी प्रेम तो इतना ज़बरदस्त है कि चौबीसों घंटे उनको सपने में भी मोदी आता है। मोदी अगर भाषण करते समय बीच में पानी पिए तो ये कहते हैं, अगर पानी भी पीया तो ये सीना तान कर कहते हैं कि देखिए कि मोदी को पानी पिला दिया। … (व्यवधान) अगर मैं गर्मी में, कड़ी धूप में भी जनता-जनार्दन के दर्शन के लिए चल पड़ता हूँ, कभी पसीना पोंछता हूँ तो कहते हैं कि देखिए मोदी को पसीना ला दिया। देखिए, इनके जीने का सहारा देखिए।

एक गीत की पंक्ति है-

डूबने वाले को तिनके का सहारा ही बहुत
दिल बहल जाए, फ़क्त इतना इशारा ही बहुत
इतने पर भी आसमान वाला गिरा दे बिजलियाँ
कोई बतला दे जरा ये डूबता फिर क्या करें।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं कांग्रेस की मुसीबत समझता हूं। बरसों से एक ही फेल्ड प्रोडक्ट को बार-बार लॉन्च करते हैं। हर बार लॉन्चिंग फेल हो जाती है। अब उसका नतीजा यह हुआ है कि मतदाताओं के प्रति उनकी नफरत भी सातवें आसमान पर पहुंच गई है। उनका लॉन्चिंग फेल होता है, नफरत जनता पर करते हैं। लेकिन, पी.आर. वाले प्रचार क्या करते हैं, मुहब्बत की दुकान का प्रचार करते हैं, इको सिस्टम लगानी पड़ती है।… (व्यवधान) इसलिए, देश की जनता भी कह रही है- यह है लूट की दुकान, यह है लूट की दुकान, झूठ का बाजार ।… (व्यवधान) ये हैं लूट की दुकान, झूठ का बाजार। इसमें नफरत है, घोटाले हैं, तुष्टिकरण है, मन काले हैं, परिवारवाद की आग के दशकों से देश हवाले है। तुम्हारी दुकानें इमरजेंसी बेची है, बंटवारा बेचा है, सिखों पर अत्याचार बेचा है, झूठ कितना सारा बेचा है, इतिहास बेचा है, उरी के सच के प्रमाण बेचा है, शर्म करो नफरत की दुकान वालों, तुमने सेना का स्वाभिमान बेचा है।… (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम तो, यहाँ बैठे हुए काफी लोग गाँव-गरीब वाली पृष्ठभूमि से हैं। यहां सदन में बड़ी संख्या में लोग गांव और छोटे कस्बों से आते हैं। गांव का कोई व्यक्ति विदेश जाए, सालों तक वह उसका गीत गाते रहता है। एक-आध बार भी कभी विदेश जाए, वहां से देखकर आया हो, सालों तक बताता रहता है कि मैं यह देखकर आया, मैं यह देखकर आया, मैंने यह सुना, मैंने ये

चीजें देखीं । यह स्वाभाविक है, गांव के व्यक्ति जिस बेचारे ने दिल्ली-मुम्बई भी न देखा हो और अमेरिका जा कर आ जाए, यूरोप जाकर आ जाए, तो वह वर्णन करता रहता है।... (व्यवधान) जिन लोगों ने कभी गमले में मूली नहीं उगाई, उन्हें वृक्षों को देख कर हैरान होना ही होना है।... (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, जो कभी जमीन पर उतरे ही नहीं, जिन्होंने हमेशा गाड़ी का शीशा डाउन करके दूसरों की गरीबी देखी है, उन्हें सब हैरान करने वाला लग रहा है।... (व्यवधान) जब ऐसे लोग भारत की स्थिति का वर्णन करते हैं तो ये भूल जाते हैं कि इस भारत में 50 साल तक उनके परिवार ने राज किया था।... (व्यवधान) एक प्रकार से जब भारत के इस रूप का वर्णन करते हैं, तब वे अपने पूर्वजों की विफलताओं का जिक्र करते हैं। यह इतिहास गवाह है। इनकी दाल गलने वाली नहीं है।... (व्यवधान) इसलिए नई-नई दुकानें खोल करके बैठ जाते हैं।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इन लोगों को पता है कि इनकी नई दुकान पर भी कुछ दिनों में ताला लग जाएगा । आज इस चर्चा के बीच देश के लोगों को मैं बड़ी गम्भीरता के साथ इस घमंडिया गठबंधन की आर्थिक नीति से भी सावधान करना चाहता हूं।... (व्यवधान) देश में यह घमंडिया गठबंधन ऐसी अर्थव्यवस्था चाहता है, जिससे देश कमजोर हो और उसका सामर्थ्य बढ़ न पाए।...(व्यवधान) हम अपने आसपास के देशों में देखते हैं।...(व्यवधान) जिन आर्थिक नीतियों को ले करके कांग्रेस और उसके साथी आगे बढ़ना चाहते हैं, जिस प्रकार से खजाने से पैसे लुटाकर वोट पाने का खेल खेल रहे हैं ...(व्यवधान) हमारे आसपास के देश के हालात देख लीजिए।...(व्यवधान) दुनिया के उन देशों की स्थिति देख लीजिए। मैं देश को कहना चाहता हूं कि इनसे सुधरने की मुझे कोई अपेक्षा नहीं है। जनता इनको सुधार देगी ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस प्रकार की चीजों का दुष्परिणाम हमारे देश पर भी हो रहा है, हमारे राज्यों पर भी हो रहा है। चुनाव जीतने के लिए अनापशनाप वायदों के कारण इन राज्यों में जनता के ऊपर नये-नये दण्ड डाले जा रहे हैं, नये-नये दो बोझ डाले जा रहे हैं और विकास के प्रोजेक्ट्स बंद करने की घोषणा की जा रही है, विधिवत रूप से घोषणा की जा रही है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह घमंडिया गठबंधन की जो आर्थिक नीति है, उन आर्थिक नीतियों का मैं परिणाम साफ देख रहा हूं। इसलिए मैं देशवासियों को चेतावनी, देशवासियों को यह सत्य समझाना चाहता हूं। ये लोग, यह घमंडिया गठबंधन, ये लोग, भारत के दिवालिया होने की गारंटी है, भारत के दिवालिया होने की गारंटी है। ये इकोनॉमी को डुबाने की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** ये इकोनॉमी को डुबाने की –

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह डबल डिजिट महंगाई की-

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह डबल डिजिट महंगाई की-

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह पॉलिसी पैरालिसिस की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह पॉलिसी पैरालिसिस की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह अस्थिरता की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह अस्थिरता की-

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह करप्शन की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह करप्शन की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह तुष्टीकरण की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह तुष्टीकरण की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह परिवारवाद की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह परिवारवाद की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह भारी बेराजगारी की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह भारी बेरोजगारी की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह आतंक और हिंसा की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह आतंक और हिंसा की -

**कई माननीय सदस्य:** गारंटी है।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** यह भारत को दो शताब्दी पीछे पहुंचाने की गारंटी है।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह कभी भारत को टॉप थ्री अर्थव्यवस्था बनाने की गारंटी नहीं दे सकते। यह मोदी देश को गारंटी देता है कि मेरे तीसरे कार्यकाल में, मैं हिंदुस्तान को टॉप थ्री की पोजीशन में लाकर रहूंगा।... (व्यवधान) यह मेरी देश को गारंटी है।...(व्यवधान) ये कभी भी देश को विकसित बनाने का सोच भी नहीं सकते हैं, उस दिशा में ये लोग कुछ कर भी नहीं सकते हैं।...(व्यवधान)

**18.40 hrs**

*At this stage, Shri Adhir Ranjan Chowdhury, Shri T. R. Baalu and some other hon. Members left the House.*

… (*Interruptions*)

आदरणीय अध्यक्ष जी, लोकतंत्र में जिनको भरोसा नहीं होता है, वे सुनाने के लिए तैयार होते हैं, लेकिन उनमें सुनने का धैर्य नहीं होता है। अपशब्द बोलो, भाग जाओ, कूड़ा-कचरा फेंको, भाग जाओ, झूठ फैलाओ, भाग जाओ, यही जिनका खेल है। यह देश इनसे ज्यादा अपेक्षा नहीं कर सकता है।

अगर इन्होंने गृह मंत्री जी की मणिपुर विषय पर चर्चा पर सहमति दिखायी होती तो अकेले मणिपुर विषय पर विस्तार से चर्चा हो सकती थी। हर पहलू पर चर्चा हो सकती थी और उनको भी बहुत कुछ कहने का मौका मिल सकता था। लेकिन उनको चर्चा में रस नहीं था। कल अमित भाई ने विस्तार से इस विषय पर जब चीजें रखीं तो देश को भी आश्चर्य हुआ है कि ये लोग इतना झूठ फैला सकते हैं। ये लोग ऐसे-ऐसे पाप करके गए हैं। आज जब इन्होंने अविश्वास का प्रस्ताव लाया, अविश्वास के सारे विषय पर बोले। ट्रेजरी बेंच का भी दायित्व बनता है कि देश के विश्वास को प्रकट करे, देश के विश्वास को नई ताकत दे, देश के प्रति अविश्वास करने वालों के लिए करारा जवाब दे, यह हमारा भी दायित्व बनता है।

हमने कहा था कि अकेले मणिपुर के लिए आकर चर्चा करो। गृह मंत्री जी ने चिट्ठी लिख कर कहा था, उनके विभाग से जुड़ा विषय था। लेकिन साहस नहीं था, इरादा नहीं था, पेट में पाप था, दर्द पेट में हो रहा था और फोड़ रहे थे सर, इसी का यह परिणाम था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मणिपुर की स्थिति पर देश के गृह मंत्री श्रीमान अमित शाह ने कल बहुत विस्तार और बड़े धैर्य से बिना रती भर राजनीति किए सारे विषय को विस्तार से समझाया। सरकार और देश की चिंता प्रकट की। उसमें देश की जनता को जागरूक करने का भी प्रयास था, उसमें पूरे सदन की तरफ से एक विश्वास का संदेश मणिपुर तक पहुंचाने का इरादा था। उसमें जन

सामान्य को शिक्षित करने का भी प्रयास था। एक नेक ईमानदारी और देश की भलाई के लिए और मणिपुर की समस्या के लिए रास्ता खोजने का एक प्रयास था। लेकिन सिवाय राजनीति के कुछ करना नहीं है, इसलिए इन्होंने यही खेल किए, यही आज किया।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, कल बड़े विस्तार से अमित भाई ने बताया। मणिपुर में अदालत का एक फैसला आया। अदालतों में क्या हो रहा है, यह हम जानते हैं। उसके पक्ष-विपक्ष में जो परिस्थितियां बनीं, हिंसा का दौर शुरू हो गया। उसमें बहुत सारे परिवारों को मुश्किल हुई, अनेक लोगों ने अपने स्वजन भी खोए हैं। महिलाओं के साथ गंभीर अपराध भी हुए। यह अपराध अक्षम्य है और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाने के लिए केन्द्र सरकार और राज्य सरकार मिलकर भरपूर प्रयास कर रही है।

मैं देश के सभी नागरिकों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि जिस प्रकार से प्रयास चल रहे हैं, निकट भविष्य में शांति का सूरज जरूर उगेगा। मणिपुर फिर एक बार नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेगा। मैं मणिपुर के लोगों से आग्रहपूर्वक कहना चाहता हूं, वहां की माताओं, बहनों और बेटियों से कहना चाहता हूं कि देश आपके साथ है, यह सदन आपके साथ है। कोई यहां हो या न हो, हम सब मिलकर इस चुनौती का समाधान निकालेंगे और वहां फिर से शांति की स्थापना होगी। मैं मणिपुर के लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि मणिपुर फिर विकास की राह पर तेज गति से आगे बढ़े, इसके प्रयासों में कोई कोर कसर नहीं रहेगी।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, यहां सदन में मां भारती के बारे में जो कहा गया है, उसने हर भारतीय की भावना को गहरी ठेस पहुंचाई है। पता नहीं मुझे कि क्या हो गया है कि क्या सत्ता के बिना ऐसा हाल किसी का हो जाता है? क्या सत्ता सुख के बिना जी नहीं सकते हैं? क्या-क्या भाषा बोल रहे हैं?

आदरणीय अध्यक्ष जी, पता नहीं क्यों कुछ लोग भारत मां की मृत्यु की कामना करते नजर आ रहे हैं? इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है? ये वो लोग हैं जो कभी लोकतंत्र की हत्या की बात करते हैं और कभी संविधान की हत्या की बात करते हैं। दरअसल, जो इनके मन में है वही उनके

कृत्यों में सामने आता है। मैं हैरान हूं, ये बोलने वाले कौन लोग हैं? क्या देश भूल गया है कि 14 अगस्त, विभाजन विभीषिका, पीड़ादायक दिवस आज भी हमारे सामने उन चीखों को लेकर, उस दर्द को लेकर आता है? ये वो लोग हैं जिन्होंने मां भारती के तीन-तीन टुकड़े कर दिए। जब मां भारती को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना था, जब मां भारती की जंजीरों को तोड़ना था, बेड़ियों को काटना था, तब इन लोगों ने मां भारती की भुजाएं काट दीं और मां भारती के तीन-तीन टुकड़े कर दिए। ये लोग किस मुंह से ऐसा बोलने की हिम्मत करते हैं?

आदरणीय अध्यक्ष जी, जिस वंदे-मातरम गीत ने देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा दी थी, हिंदुस्तान के हर कोने में वंदे-मातरम चेतना का स्वर बन गया था, तुष्टीकरण की राजनीति के चलते ये वो लोग है जिन्होंने मां भारती के टुकड़े किए, इतना ही नहीं वंदे-मातरम गीत के भी टुकड़े कर दिए। ये वो लोग हैं, जो - भारत तेरे टुकड़े होंगे, ये गैंग, ये नारा लगाने वाले लोगों को बढ़ावा देने और उनको प्रोत्साहन करने के लिए पहुंच जाते हैं। भारत तेरे टुकड़े होंगे, ये उनको बढ़ावा दे रहे हैं। ये उन लोगों की मदद कर रहे हैं जो कहते हैं कि सिलिगुड़ी के पास जो नार्थ-ईस्ट को जोड़ने वाला छोटा सा कोरिडोर है, उसे काट दें तो नार्थ-ईस्ट बिल्कुल अलग हो जाएगा।

ऐसा सपना देखने वालों का ये लोग समर्थन करते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं जरा इनको, ये जहां भी हों, जरा मेरे सवाल का अगल-बगल में बैठे हुए को जवाब दें, ये जो बाहर गए हैं, उनसे जरा पूछिए कि कच्चतीवु क्या है? कोई इनसे पूछे कि कच्चतीवु क्या है? ये इतनी बड़ी बातें करते हैं न, आज मैं बताना चाहता हूं कि कच्चतीवु क्या है। कच्चतीवु कहां है? जरा उनसे पूछ लीजिए। इतनी बड़ी बातें लिखकर देश को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। ये डीएमके वाले, उनकी सरकार, उनके मुख्य मंत्री मुझे चिट्ठी लिखते हैं। अभी भी लिखते हैं और कहते हैं कि मोदी जी कच्चतीवु वापस ले आइए। ये कच्चतीवु है क्या? यह किसने किया? तमिलनाडु से आगे श्रीलंका के पहले एक टापू, किसने किसी दूसरे देश को दे दिया था? कब दिया था? कहां गए थे? क्या वहां भारत माता नहीं थी? क्या वह माँ भारती का अंग नहीं था?

आपने इसको भी तोड़ा। कौन था उस समय? श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में वह हुआ था। कांग्रेस का इतिहास माँ भारती को छिन्न-भिन्न करने का रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस का माँ भारती के प्रति प्रेम क्या रहा है? भारत के वासियों के प्रति प्रेम क्या रहा है? एक सच्चाई, बड़े दु:ख के साथ मैं इस सदन के सामने रखना चाहता हूं। ये पीड़ा वह नहीं समझ पाएंगे। मैं नॉर्थ-ईस्ट के चप्पे-चप्पे पर घूमा हुआ व्यक्ति हूं और राजनीति में कुछ नहीं था, तब भी मैं अपने पैर वहां घिसता था। मेरा उस क्षेत्र के प्रति एक इमोशनल अटैचमेंट है। इनको अंदाज नहीं है।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके सामने सदन में तीन प्रसंग रखना चाहता हूं और बड़े दर्द के साथ कहना चाहता हूं। देशवासी भी सुन रहे हैं। पहली घटना 5 मार्च, 1966, उस दिन कांग्रेस ने मिजोरम में असहाय नागरिकों पर अपनी वायुसेना के माध्यम से हमला करवाया था। वहां गंभीर विवाद हुआ था। कांग्रेस वाले जवाब दें क्या, क्या वह दूसरे देश की वायुसेना थी? क्या मिजोरम के लोग मेरे देश के नागरिक नहीं थे? उनकी सुरक्षा भारत सरकार की जिम्मेवारी थी कि नहीं थी? 5 मार्च, 1966 को वायुसेना से हमला करवाया गया, निर्दोष नागरिकों पर हमला करवाया गया।

माननीय अध्यक्ष जी, आज भी मिजोरम में 5 मार्च को पूरा मिजोरम शोक मनाता है। उस दर्द को मिजोरम भूल नहीं पाता है। इन्होंने कभी मरहम लगाने की कोशिश नहीं की। घाव भरने का प्रयास तक नहीं किया है। कभी उनको इसका दु:ख नहीं हुआ है। कांग्रेस ने इस सच को देश के सामने छिपाया है दोस्तों। यह सत्य देश से उन्होंने छिपाया है। क्या अपने ही देश में वायु सेना से हमला करवाना है? कौन था उस समय? इंदिरा गांधी। अकाल तख्त पर हमला हुआ, जो अभी भी हमारी स्मृति में है। इनको मिजोरम में उसके पहले ही आदत लग गई थी।

इसलिए वे मेरे ही देश में अकाल तख्त पर हमला करने पहुंचे थे और ये यहां हमें उपदेश दे रहे हैं। इन्होंने नॉर्थ-ईस्ट के लोगों के विश्वास की हत्या की है। वे घाव किसी न किसी समस्या के रूप में उभरकर आते हैं। उन्हीं के कारनामें हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं दूसरी घटना का वर्णन करना चाहता हूं। वह घटना सन् 1962 की है। सन् 1962 का वह खौफनाक रेडियो प्रसारण आज भी शूल की तरह नॉर्थ-ईस्ट के लोगों को चुभ रहा है। पंडित नेहरू ने सन् 1962 में कहा था, जब देश के ऊपर चाइना का हमला चल रहा था, देश के हर कोने के लोग अपनी रक्षा के लिए भारत से अपेक्षा कर रहे थे कि उनको कोई मदद मिलेगी, उनकी जान-माल की रक्षा होगी, देश बच जाएगा। लोग अपने से साधनों से लड़ाई लड़ने के लिए मैदान में उतरे हुए थे। ऐसी विकट घड़ी में दिल्ली के शासन पर बैठे हुए, उस समय पर जो एकमात्र नेता हुआ करते थे, पंडित नेहरू ने रेडियो पर क्या कहा था? उन्होंने कहा था कि My heart goes out to the people of Assam. उन्होंने ये हाल करके रखा था। वह प्रसारण आज भी असम के लोगों के एक नश्तर की तरह चुभता रहता है। उस समय किस प्रकार से नेहरू जी ने उन्हें अपने भाग्य पर जीने के लिए मज़बूर कर दिया था। ये हमसे हिसाब मांग रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहां से लोहियावादी चले गए हैं, मैं उनको भी सुनाना चाहता था। जो लोग अपने आपको लोहिया जी का वारिस कहते हैं और कल जो सदन में बड़ा उछल-उछलकर बोल रहे थे, हाथ लंबे-चौड़े करने की कोशिश कर रहे थे। लोहिया जी ने नेहरू जी पर गंभीर आरोप लगाया था। लोहिया जी ने कहा था, वह आरोप था कि नेहरू जी जान-बूझकर नॉर्थ-ईस्ट का विकास नहीं कर रहे हैं। लोहिया जी के शब्द थे – "ये कितनी लापरवाही वाली और कितनी खतरनाक बात है, 30,000 वर्ग मील से बड़े क्षेत्र को एक कोल्ड स्टोरेज में बंद करके उसे हर तरह के विकास से वंचित कर दिया गया है।"

लोहिया जी ने नेहरू जी पर ये आरोप लगाया था कि नॉर्थ-ईस्ट के लिए आपका रवैया क्या है। यह कहा था। नॉर्थ-ईस्ट के लोगों के हृदय को, उनकी भावनाओं को, आपने कभी समझने की कोशिश नहीं की है। मेरे मंत्रिपरिषद के मंत्री 400 रात्रि निवास करके, अकेले स्टेट हेडक्वॉर्टर पर नहीं, डिस्ट्रक्ट हेडक्वॉर्टर पर और मैं स्वयं 50 बार गया हूं। ये सिर्फ आंकड़ा नहीं है, ये साधना है, ये नॉर्थ-ईस्ट के प्रति समर्पण है। कांग्रेस का हर कामकाज राजनीति, चुनाव और सरकार के आस-

पास ही घूमता रहता है। जहां ज्यादा सीटें मिलती हों, राजनीति की अपनी खिचड़ी पकती है, तो वहां तो मजबूरन कुछ कर लेते हैं।

**श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम) :** कांग्रेस वाले तो चले गए। ... (व्यवधान)

**श्री नरेन्द्र मोदी :** देश सुन रहा है। ... (व्यवधान) नॉर्थ ईस्ट में उनकी कोशिश रही कि जहां पर इक्का-दुक्का सीटें होती थीं, वे इलाके उनके लिए स्वीकार्य नहीं थे, वे इलाके उनको मंजूर नहीं थे, उनकी तरफ उनका ध्यान नहीं गया था। ... (व्यवधान) देश के नागरिक के प्रति उनकी कोई संवेदना नहीं थी।

**19.00 hrs**

*At this stage,* Shri Nama Nageswara Rao, *Shri Hanuman Beniwal and some other hon. Members left the House.*

आदरणीय अध्यक्ष जी, जहां इक्का-दुक्का सीटें हुआ करती थीं, उसके प्रति सौतेला व्यवहार कांग्रेस के डीएनए में रहा है, पिछले कई वर्षों का इतिहास देख लीजिए। नॉर्थ ईस्ट में उनका यह रवैया था, लेकिन मैं पिछले नौ साल के अपने प्रयासों से कहता हूं कि हमारे लिए नॉर्थ ईस्ट हमारे जिगर का टुकड़ा है। आज मणिपुर की समस्याओं को ऐसे प्रस्तुत किया जा रहा है, जैसे बीते कुछ समय में ही वहां यह परिस्थिति पैदा हुई हो। कल अमित भाई ने विस्तार से बताया है कि समस्या क्या है, यह कैसे हुआ है, लेकिन मैं आज बड़ी गम्भीरता से कहना चाहता हूं कि नॉर्थ ईस्ट की इन समस्याओं की कोई जननी है तो जननी एकमात्र कांग्रेस है। नॉर्थ ईस्ट के लोग इसके लिए जिम्मेवार नहीं है, इनकी ये राजनीति जिम्मेवार है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत मणिपुर, भाव-भक्ति की समृद्ध विरासत वाला मणिपुर, स्वतंत्रता संग्राम और आजाद हिंद फौज अनगिनत बलिदान देने वाला मणिपुर, कांग्रेस के शासन में ऐसा हमारा महान भू भाग अलगाव की आग में बलि चढ़ गया था। आखिर क्यों? साथियो, मैं आप सबको भी याद दिलाना चाहता हूं और यहां मेरे नॉर्थ ईस्ट के जो

भाई हैं, उनको हर चीज का पता है। एक समय था, जब मणिपुर में हर व्यवस्था उग्रवादी संगठनों की मर्जी से चलती थी। जो वे कहें, वही होता था और उस समय मणिपुर में किसकी सरकार थी?

**कई माननीय सदस्य :** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी :** जब सरकारी दफ्तरों में महात्मा गांधी की फोटो नहीं लगाने दी जाती थी, तब सरकार किसकी थी?

**कई माननीय सदस्य :** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी :** जब मोइरांग में आजाद हिंद फौज के संग्रहालय पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा पर बम फेंका गया, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी?

**कई माननीय सदस्य :** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी :** आदरणीय अध्यक्ष जी, जब मणिपुर में स्कूलों में राष्ट्रगान नहीं होने देंगे, ये निर्णय किए जाते थे, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी?

**कई माननीय सदस्य :** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी :** जब एक अभियान चला था, अभियान चलाकर लाइब्रेरी में रखी गई किताबों को जलाने का, देश के अमूल्य ज्ञान की विरासत को जलाते समय सरकार किसकी थी?

**कई माननीय सदस्य :** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी :** जब मणिपुर में मंदिर की घंटी शाम को चार बजे बंद हो जाती थी, ताले लग जाते थे, पूजा-अर्चना करना बड़ा मुश्किल हो जाता था, सेना का पहरा लगाना पड़ता था, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी?

**कई माननीय सदस्य :** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** आदरणीय अध्यक्ष जी, जब इंफाल के इस्कॉन मंदिर पर बम फेंककर श्रद्धालुओं की जान ले ली गई थी, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी?

**कई माननीय सदस्य:** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** आप हाल देखिए, अगर वहां पर आईएएस, आईपीएस अफसरों को काम करना होता था तो उनको उनकी तरख्वाह का एक हिस्सा इन उग्रवादी लोगों को देना पड़ता था, तब जाकर वे रह पाते थे। तब सरकार किसकी थी?

**कई माननीय सदस्य:** कांग्रेस।

**श्री नरेन्द्र मोदी:** आदरणीय अध्यक्ष जी, इनकी पीड़ा सलेक्टिव है। इनकी संवेदनाएं सलेक्टिव हैं। इनकी सब बातचीत राजनीति से शुरू होती है और राजनीति से आगे बढ़ती है। वे राजनीति के दायरे से बाहर आकर न मानवता के लिए सोच सकते हैं, न देश के लिए सोच सकते हैं, न ही देश की इन कठिनाइयों के लिए सोच सकते हैं। उनको सिर्फ राजनीति के सिवाय कुछ नहीं सूझता है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मणिपुर में जो सरकार है, वह पिछले छ: सालों से इन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने के लिए लगातार समर्पित भाव से कोशिश कर रही है। बंद और ब्लॉकेज का जमाना कोई भूल नहीं सकता है। मणिपुर में आए दिन बंद और ब्लॉकेज होता था। आज वह बीते दिन की बात हो चुकी है। शांति स्थापना के लिए, हर एक को साथ लेकर चलने के लिए एक विश्वास जगाने का प्रयास निरंतर हो रहा है और आगे भी होगा।

हम जितना ज्यादा राजनीति को दूर रखेंगे, उतनी शांति निकट आएगी। मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हमें नॉर्थ-ईस्ट आज भले ही दूर लगता हो, लेकिन जिस प्रकार से साउथ ईस्ट एशिया का विकास हो रहा है, जिस प्रकार से आसियान देशों का महत्व बढ़ रहा है, वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमारी ईस्ट की इस प्रगति के साथ-साथ नॉर्थ-ईस्ट वैश्विक दृष्टि से सेन्टर पॉइंट बन जाएगा। मैं यह देख रहा हूँ और इसलिए मैं पूरी ताकत से आज नॉर्थ-ईस्ट की प्रगति के लिए लड़ रहा हूँ, वोट के लिए नहीं कर रहा हूँ। मुझे मालूम है कि करवट लेती हुई विश्व की नई संरचना किस प्रकार से साउथ ईस्ट एशिया और आसियान कंट्रीज़ के अंदर प्रभाव पैदा करने वाली है और तब नॉर्थ-ईस्ट का क्या महत्व बढ़ने वाला है और नॉर्थ-ईस्ट की जाहोजलाली, गौरवगान फिर से कैसे शुरू होने वाला है, उसे मैं देख सकता हूँ और इसलिए मैं लगा हुआ हूँ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इसीलिए हमारी सरकार ने नॉर्थ-ईस्ट के विकास को पहली प्राथमिकता दी है। पिछले 9 वर्षों में लाखों-करोड़ों रुपये नॉर्थ-ईस्ट के इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमने लगाए हैं। आज आधुनिक हाईवे, आधुनिक रेलवे, आधुनिक नए एयरपोर्ट्स, ये नॉर्थ-ईस्ट की पहचान बन रहे हैं। आज पहली बार अगरतला रेल कनेक्टिविटी से जुड़ा है। पहली बार मणिपुर में गुड्स ट्रेन पहुंची है। पहली बार नॉर्थ ईस्ट में वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेन चली है। पहली बार अरुणाचल प्रदेश में ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट बना है। पहली बार अरुणाचल प्रदेश में सिक्किम जैसा राज्य एयर कनेक्टिविटी से जुड़ा है। पहली बार वाटरवेज के जरिए पूर्वोत्तर इंटरनेशनल फ्रेट का गेटवे बना है। पहली बार नॉर्थ-ईस्ट में एम्स जैसा मेडिकल संस्थान खुला है। पहली बार मणिपुर में देश की पहली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी खुल रही है। पहली बार मिजोरम में इंडियन इंस्टिटयूट ऑफ मास कम्युनिकेशन जैसे संस्थान खुल रहे हैं। पहली बार केन्द्रीय मंत्रिमंडल में नॉर्थ-ईस्ट की इतनी भागीदारी बढ़ी है। पहली बार नागालैंड से एक महिला सांसद राज्य सभा में पहुंची है। पहली बार इतनी बड़ी संख्या में नॉर्थ-ईस्ट के लोगों को पद्म पुरुस्कार से सम्मानित किया गया है। पहली बार पूर्वोत्तर से लाचित बोरफुकन जैसे नायक की झांकी गणतंत्र दिवस में शामिल हुई है। पहली बार मणिपुर की रानी गाइदिन्ल्यू के नाम पर पूर्वोत्तर का पहला राज्य ट्राइबल फ्रीडम फाइटर म्यूजियम बना है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम जब सबका साथ सबका विकास कहते हैं तो यह हमारे लिए नारा नहीं है। ये हमारे शब्द नहीं हैं। ये हमारे लिए आर्टिकल ऑफ फेथ है। हमारे लिए कमिटमेंट हैं और हम देश के लिए निकले हुए लोग हैं। हमने तो कभी जीवन में सोचा ही नहीं था कि कभी ऐसी जगह पर आकर के बैठने का सौभाग्य मिलेगा।

लेकिन इस देश की जनता की कृपा है कि उन्होंने हमें अवसर दिया है, तो मैं देश की जनता को विश्वास दिलाता हूं कि शरीर का कण-कण, समय का पल-पल सिर्फ और सिर्फ देशवासियों के लिए है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज मैं अपने विपक्ष के साथियों की एक बात के लिए तारीफ करना चाहता हूं, क्योंकि वैसे तो वे सदन के नेता को नेता मानने को तैयार नहीं हैं। मेरे किसी भाषण को उन्होंने होने नहीं दिया है। लेकिन मुझमें धैर्य भी है, सहनशक्ति भी है और झेल भी लेता हूं और वे थक भी जाते हैं। लेकिन मैं एक बात के लिए तारीफ करता हूं कि सदन के नेता के नाते मैंने वर्ष 2018 में उनको काम दिया था कि आप वर्ष 2023 में अविश्वास प्रस्ताव लेकर आएं और उन्होंने मेरी बात मानी। मुझे दु:ख इस बात का है कि वर्ष 2018 के बाद वर्ष 2023 में पांच सालों में थोड़ा अच्छा काम करते, अच्छे ढंग से करते, लेकिन तैयारी बिल्कुल नहीं थी, कोई इनोवेशन नहीं था, कोई क्रिएटिविटी नहीं थी। न मुद्दे खोज पा रहे थे, पता नहीं, इन्होंने देश को बहुत निराश किया है। चलिए कोई बात नहीं है, वर्ष 2028 में हम फिर से मौका देंगे। लेकिन मैं उनसे इस बार आग्रह करता हूं कि वर्ष 2028 में जब आप अविश्वास प्रस्ताव हमारी सरकार के खिलाफ लेकर आएं, तो थोड़ी तैयारी करके आइए। कुछ मुद्दे ढूंढ कर आइए। ऐसे क्या? घिसी-पीटी बातें लेकर घूमते रहते हो और देश की जनता को थोड़ा विश्वास दिलाइए कि आप विपक्ष के भी योग्य हो, इतना तो करो। आपने वह योग्यता भी खो दी है। मैं आशा करता हूं कि थोड़ा होम वर्क करेंगे। तू-तू मैं-मैं और चिखना-चिल्लाना, नारेबाजी करना, उसके लिए तो 10 लोग मिल जाएंगे, लेकिन थोड़ा दिमाग वाला भी काम कीजिए, न।

आदरणीय अध्यक्ष जी, राजनीति अपनी जगह पर है। संसद, यह दल के लिए प्लेटफॉर्म नहीं है। संसद, यह देश के लिए सम्माननीय सर्वोच्च संस्थान है और इसलिए सांसदों के लिए भी इसके प्रति गंभीरता होना बहुत जरूरी है। देश इतने संसाधन लगा रहा है। देश के गरीब के हक का यहां खर्च किया जाता है। यहां का पल-पल का उपयोग देश के लिए होना चाहिए, लेकिन यह गंभीरता विपक्ष के पास नजर नहीं आ रही है। इसलिए अध्यक्ष जी यह राजनीति ऐसी तो नहीं हो सकती कि चलो, खाली हैं, जरा संसद घूम आते हैं। इसलिए संसद है, क्या? यह तरीका होता है, क्या?

आदरणीय अध्यक्ष जी, चलो संसद घूम आते हैं, इस भावना से राजनीति तो चल सकती है, देश नहीं चल सकता है। यहां हमें देश चलाने के लिए काम दिया है और इसलिए उस जिम्मेवारी को पूरा नहीं करते तो हम जनता-जनार्दन का, अपने मतदाताओं का विश्वाघात करते हैं और इन्होंने विश्वासघात किया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मेरा इस देश की जनता पर अटूट विश्वास है, अपार विश्वास है। मैं विश्वास से कहता हूं कि हमारे देश के लोग एक प्रकार से अखंड विश्वासी लोग हैं। हजार साल की गुलामी के कालखंड में भी उनके भीतर के विश्वास को कभी उन्होंने हिलने नहीं दिया था। यह अखंड विश्वासी समाज है। अखंड चैतन्य से भरा हुआ समाज है। ये संकल्प के लिए समर्पण करने की परंपरा को लेकर चलने वाला समाज है।

वयं राष्ट्रांगभूता कहकर के देश के लिए उसी संवेदना के साथ काम करने वाला यह समाज है। इसलिए माननीय अध्यक्ष जी, यह ठीक है कि गुलामी के कालखंड में हम पर बहुत हमले हुए। हमें बहुत कुछ झेलना पड़ा। लेकिन हमारे देश के वीरों ने, हमारे देश के महापुरुषों ने, हमारे देश के चिंतकों ने, हमारे देश के सामान्य नागरिकों ने विश्वास की उस लौ को कभी बुझने नहीं दिया। कभी भी वह लौ बुझी नहीं थी और जब लौ बुझी नहीं, तो उस प्रकाश-पुंज के साये में आज हम उस आनंद को ले रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बीते 9 वर्षों में देश के सामान्य मानवी का विश्वास नई बुलंदियों को छू रहा है। नए अरमानों को छू रहा है। मेरे देश के नौजवान विश्व की बराबरी करने के सपने देखने लगे हैं। इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है कि हर भारतीय विश्वास से भरा हुआ है। आदरणीय अध्यक्ष जी, आज का भारत न दबाव में आता है, न दबाव को मानता है। आज का भारत न झुकता है, आज का भारत न थकता है, आज का भारत न रुकता है। वह समृद्ध विरासत, विश्वास लेकर, संकल्प लेकर चली है और यही कारण है कि जब देश का सामान्य मानवी देश पर विश्वास करने लगता है तो दुनिया को भी हिन्दुस्तान पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है। आज जब दुनिया का विश्वास भारत के प्रति बना है, उसका एक कारण भारत के लोगों का खुद पर विश्वास बढ़ा है।

यह सामर्थ्य है, कृपा करके इस विश्वास को तोड़ने की कोशिश मत कीजिए। देश को आगे बढ़ाने, ले जाने का मौका आया है, समझ नहीं सकते तो चुप रहो। इंतजार करो, लेकिन देश के विश्वास को विश्वासघात करके तोड़ने की कोशिश मत करो।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बीते वर्षों में विकसित भारत की एक मजबूत नींव रखने में हम सफल हुए हैं। सपना लिया है कि 2047 में, जब देश आज़ादी के 100 वर्ष मनायेगा, आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण होते ही अमृत काल शुरू हुआ है और अमृत काल के प्रारंभिक वर्षों में हैं, तब इस विश्वास के साथ मैं कहता हूं कि जो नींव आज मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है, उस नींव की ताकत है कि 2047 में हिन्दुस्तान विकसित हिन्दुस्तान होगा। साथियो, भारत विकसित भारत होगा और यह देशवासियों के परिश्रम से होगा। देशवासियों के विश्वास से होगा, देशवासियों के संकल्प से होगा, देशवासियों की सामूहिक शक्ति से होगा, देशवासियों की अखंड एक राष्ट्र-पुरुषार्थ से होने वाला है। यह मेरा विश्वास है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हो सकता है कि यहां जो बोला जाता है, वह रिकॉर्ड के लिए तो शब्द चले जाएंगे, लेकिन इतिहास हमारे कर्मों को देखने वाला है, जिन कर्मों से एक समृद्ध भारत का सपना साकार करने के लिए मजबूत नींव का कालखंड रहा है, उस रूप में देखा जाएगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस विश्वास के साथ, आज सदन के सामने मैं कुछ बातें स्पष्टतापूर्वक करने के लिए आया था। मैंने बहुत मन पर संयम रख कर उनके हर अपशब्दों को हँसते हुए, अपने मन को खराब न करते हुए 140 करोड़ देशवासियों को, उनके सपनों और संकल्पों को अपनी नजर के सामने रखकर मैं चल रहा हूं। मेरे मन में यही है। मैं सदन के साथियों से आग्रह करूंगा, आप समय को पहचानिये, साथ मिलकर के चलें। इस देश में मणिपुर से भी गंभीर समस्याएं पहले भी आई हैं, लेकिन हमने मिलकर के रास्ते निकाले हैं। आओ मिलकर के चलें, मणिपुर के लोगों को विश्वास देकर के चलें, राजनीति का खेल करने के लिए मणिपुर की भूमिका का कम से कम दुरुपयोग न करें।

वहाँ जो हुआ है, वह दुखपूर्ण है। लेकिन उस दर्द को समझकर, दर्द की दवाई बनकर काम करें। यही हमारा रास्ता होना चाहिए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस चर्चा में, इस तरफ से बहुत समृद्ध चर्चा हुई है। एक-डेढ़ घंटे तक हमें सरकार के कामकाज का हिसाब देने का अवसर मिला है। अगर यह प्रस्ताव न आया होता, तो शायद हमें भी इतना कुछ कहने का मौका न मिलता।

इसलिए मैं फिर एक बार प्रस्ताव लाने वालों का तो मैं आभार व्यक्त करता हूँ, लेकिन यह प्रस्ताव देश के विश्वासघात का प्रस्ताव है, देश की जनता इसे अस्वीकार करे, यह ऐसा प्रस्ताव है। इसके साथ, मैं फिर एक बार, आदरणीय अध्यक्ष जी, आपका हृदय से आभार व्यक्त करते हुए, अपनी वाणि को विराम देता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद ।

**माननीय अध्यक्ष :** श्री गौरव गोगोई जी – उपस्थित नहीं ।

अब मैं श्री गौरव गोगोई द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखता हूँ।

प्रश्न यह है:

"कि यह सभा मंत्रिपरिषद में अपने विश्वास का अभाव व्यक्त करती है।"

<u>प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ ।</u>

---

**माननीय अध्यक्ष :** आज की चर्चा में माननीय श्री अधीर रंजन चौधरी और श्री वीरेन्द्र सिंह जी का व्यवहार सदन की मर्यादाओं के अनुरूप नहीं रहा।

श्री वीरेन्द्र सिंह जी, क्या आप कुछ बोलना चाहते हैं?

**श्री वीरेन्द्र सिंह (बलिया):** माननीय अध्यक्ष जी, मैं हमेशा सदन के सम्मान का ध्यान रखता हूँ, आपके अध्यक्षीय पीठ का भी ध्यान रखता हूँ। जो भी और जिस व्यवहार से सदन की कार्यवाही में